The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Special Issue 1 | February 2026
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता

Mrs. Chitrarekha Raghuvanshi

Asst. Prof. Education, Dev Sanskriti College of Edu. & Tech. Khapri, Durg

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18797703

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 16-01-2026

Published: 05-02-2026

Keywords:

वेद, उपनिषद, दर्शन, साहित्य, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, गणित, उपनिषद

ABSTRACT

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से मानव जीवन, समाज और प्रकृति के समन्वय की अद्वितीय दृष्टि प्रस्तुत रही है। इसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, साहित्य, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, गणित, और विज्ञान जैसे विविध शाखाएँ शामिल है जो ज्ञान को केवल सूचना नही, बल्कि अनुभूति और मूल्य के रूप में देखती है। डिजिटल युग में जब सूचना का विस्फोट और तकनीकी निर्भरता बढ़ रही है तब भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता और भी बढ़ जाती है। यह परंपरा संतुलन, नैतिकता और मानवीयता पर आधारित है – जो आज के युग की कृ त्रिमता और उपभोक्तावादी दृष्टिकोण को संतुलित करने में सहायक हो सकती है। भारतीय दर्शन का ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का सिद्धांत वैश्विक डिजिटल समाज में समरसता और सह–अस्तित्व का मार्ग दिखाता है। योग और ध्यान जैसी भारतीय विधाएँ मानसिक संतुलन और डिजिटल थकान से मुक्ति का साधन बन रही है। वही शिक्षा में ''गुरू–शिष्य परंपरा'' के मूल्यों को आधुनिक ई–लर्निंग के साथ जोड़ने से मानवीय संवेदना और नैतिकता को पुनः जीवित किया जा सकता है। इस प्रकार डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नही, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक शक्ति है, जो तकनीक को मानवीय मूल्यों से जोड़कर समग्र विकास की दिशा में ले जा सकती है।

प्रस्तावना

आज का युग डिजिटल क्रांति का युग है, जहाँ सूचना, ज्ञान और संचार के साधन पूर्णतः तकनीकी माध्यमों पर आधारित हो चुके है। कृत्रिमबुद्धिता, इंटरनेट, मोबाइल एप्स, सोशल मीडिया और ई–लर्निंग जैसे उपकरणों ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को परिवर्तित कर दिया है। ऐसे परिवर्तनीय और तीव्रगामी युग में यह प्रश्न उठता है कि क्या प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की कोई प्रांसंगिकता आज भी शेष है।

वास्तव में भारतीय ज्ञान परंपरा केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विचारों का समूह नही है, बल्कि यह जीवन दृष्टि, नैतिकता, पर्यावरण संतुलन, समरसता और आत्मबोध पर आधारित एक समग्र चिंतन प्रणाली है। वेद, उपनिषद, गीता, बौद्ध और जैन दर्शन, आयुर्वेद योग तथा डिजिटल युग की चुनौतियाँ जैसे तनाव, अकेलापन, सूचना विस्फोट, विचारों का द्वन्द, नैतिक संकट, कृत्रिम बुद्धिमता का असंतुलन, पर्यावरणीय समस्या, सामाजिक असमानता, इन सभी का समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा मे निहित है। अतः स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान न केवल ऐतिहासिक धरोहर है, बल्कि आज के डिजिटल विश्व को मानवीय, संतुलित और नैतिक बनाने का महत्वपूर्ण आधार भी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध बौद्धिक परंपराओं में से एक है। यह ज्ञान केवल पुस्तकों में नही, बल्कि अनुभव, अभ्यास, संवाद, शोध और जीवन मूल्यों में निहित है। इसके प्रमुख स्त्रोत निम्नलिखित है।

वेद और उपनिषद

वेद क्या है ?

वेद भारतीय ज्ञान परंपरा के सबसे प्राचीन और मूलग्रंथ है। इन्हें श्रुति कहा जाता है, क्योंकि ये ‘‘सुने’’ और ‘‘अनुभूत’’ ज्ञान पर आधारित है।

वेदों की संख्या – 4

1. **ऋंग्वेद** :– देवताओं के स्त्रोत दर्शन और ज्ञान का संग्रह।

2. यजुर्वेद :– यज्ञ की विधियाँ और मंत्र।

3. सामवेद :– संगीत, स्वर और गान के मंत्र।

4. अथर्ववेद :– दैनिक जीवन, चिकित्सा, शांति सुरक्षा आदि से जुड़े मंत्रं।

वेदों की प्रमुख विषेषताएँ

1. विश्व का सबसे प्राचीन साहित्य
2. ऋषियों के आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित
3. धर्म, दर्शन, खगोल, चिकित्सा, संगीत आदि का आधार
4. कर्मकांड व आध्यात्मिकता दोनों का समन्वय

उपनिषद क्या है ?

उपनिषद वेदों का दार्शनिक भाग है। इन्हें वेदांत भी कहा जाता है इसमें लगभग 108 उपनिषद माने जाते जिनमें मुख्य 13 उपनिषद महत्वपूर्ण है, जैसे– ईश, केन, कंठ, मुण्डक, मांडूक्य, छांदोक्य, बृहदारण्यक आदि उपनिषद का अर्थ होता है।

डिजिटल युग की चुनौतियाँ

डिजिटल युग में कई तरह की चुनौतियाँ सामने आती है, इन्हें तकनीकी, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और नैतिक आयामों में बांटा जा सकता है। इसके प्रमुख चुनौतियाँ निम्नलिखित है –

1. फेक न्यूज और सूचना का भ्रम :

डिजिटल युग में सोशल मीडिया के कारण गलत, भ्रामक और आधी–अधूरी जानकारी बहुत तेजी से फैलती है। इससे समाज में भ्रम, तनाव और गलत निर्णय लेने की समस्या बढ़ती है। फेक न्यूज से लोकतंत्र को भी क्षति पहुंचती है। गलत जानकारी देखकर लोग गलत निर्णय ले सकते है। किसी व्यक्ति के बारे में झूठी बातें फैलाकर उसकी प्रतिष्ठा, करियर और सामाजिक छवि को नुकसान पहुंचाया जा सकता है।

2. साइबर अपराध और डेटा सुरक्षा का खतरा :

डेटा चोरी, फिशिंग, साइबर बुलिंग, ऑनलाइन धोखाधड़ी जैसे घटनाएँ बंद रही है। डिजिटल युग में जैसे–जैसे इंटरनेंट का उपयोग बढ़ रहा है, वैसे–वैसे साइबर अपराध और डेटा सुरक्षा से जुड़े खतरे

भ्झी तेजी से बढ़ते जा रहे है। यह व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय स्तर पर गंभीर चुनौती बन चुके है।

साइबर अपराध क्या है – साइबर अपराध वे अपराध है जो कम्प्यूटर, इंटरनेट या डिजिटल उपकरणों के माध्यम से किए जाते है। इनमें जानकारी चोरी करना, बैंक खातों में सेंध लगाना इत्यादि कार्य साइबर अपराध की श्रेणी में आते है।

3. मानसिक तनाव, अकेलापन और डिजिटल एडिक्षन :

डिजिटल युग में मानसिक तनाव, अकेलापन और डिजिटल एडिक्शन तीन बड़ी चुनौतियाँ बनकर उभर रही है। यह चुनौनियाँ व्यक्तिगत जीवन, सामाजिक संबंधों, और मानसिक स्वास्थ्य को गहराई से प्रभावित करती है। डिजिटल तकनीकी ने जीवन को सरल बनाया, लेकिन इसके अत्यधिक उपयोग से तनाव बढ़ाया है। इससे चिड़चिड़ापन, नींद की कमी, एकाग्रता में गिरावट और निर्णय लेने की क्षमता को कमजोर करती है। डिजिटल मंचों पर कनेक्टेड होने के बावजूद लोग भावनात्मक रूप से अकेले होते जा रहे है। ऑनलाइन निजता वास्तविक संबंधों की जगह ले रही है। परिवार, दोस्त पास होते हुए भी हर कोई अपने मोबाइल में व्यस्त हो जाते है।

4. मानव मूल्यों और सामाजिक संबंधों में गिरावट :

डिजिटल युग में मानव जीवन का आसान और तेज बनाया है, लेकिन इसके साथ ही मानवमूल्यों और सामाजिक संबंधों में गिरावट एक गंभीर चुनौती बनकर उभरी है। लगातार स्क्रीन पर समय बिताने से लोग दूसरों की भावनाओं को समझने और महसूस करने की क्षमता खोले लगे है। वास्तविक दुख–दर्द से जुड़ाव कम होता जा रहा है। सही तुरंत उत्तर पाने की आदत से लोगों में धैर्य कम होता जा रहा है। सामाजिक संबंधों में गिरावट आते जा रहे है।

5. संस्कृति और परंपरा दूरी :

डिजिटल युग ने जहाँ तैयार, जानकारी और तकनीक की अपार संभावनाएँ खोली है, वहीं इसने हमारी सांस्कृतिक जड़ों और परंपराओं पर गहरा प्रभाव भी डाला है। तेजी से बदलती डिजिटल जीवनशैली ने व्यक्तित को वैश्विक तो बनाया पर अपनी स्थानीय संस्कृति से दूर भी किया। यह दूरी भारतीय समाज के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है। भोजन, पहनावे, संगीत, बोलचाल और मनोरंजन में पश्चिमी शैली

तेजी से अपनाई जा रही है। परिणामस्वरूप लोक–संस्कृति, लोकनृत्य, लोक संगीत और पारंपरिक उत्सवों का आकर्षण कम होता जा रहा है।

6. भारतीय ज्ञान परंपरा से दूरी :

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की पुरानी और समृद्ध ज्ञान संपदा मानी जाती है। इसमें वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, आयुर्वेद, योग, ज्योतिष, गणित, दर्शन साहित्य, कला, संगीत, कृषि विज्ञान, जल प्रबंधन, वास्तु तथा लोक ज्ञान जैसी विविध विधाएँ शामिल है। लेकिन आज के डिजिटल और वैश्विक युग में इस ज्ञान परंपरा से दूरी तेजी से बढ़ रही है। यह न केवल सांस्कृतिक चुनौती है बल्कि बौद्धिक और सामाजिक संचार भी है।

डिजिटल युग में परम्परा का उपयोग :

1. ऑनलाइन संस्कृति शिक्षण वेद अध्ययन पोर्टल :

ऑनलाइन संस्कृति शिक्षण और वेद अध्ययनरत पोर्टल से जुड़े प्रमुख और विश्वसनीय विकल्प दिए जा रहे हैं। इन पोर्टलों पर भारतीय संस्कृति, संस्कृत वेद, उपनिषद, आयुर्वेद, योग और अन्य पारंपरिक ज्ञान का डिजिटल अध्ययन किया जा सकता है, पुराण, उपनिषद, वेदांत साहित्य वीडियो लेक्चर अभ्यास संस्कृत, प्राचीन ग्रंथ आदि ग्रंथों का अध्ययन हम सभी ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से पढ़ सकते है।

2. भारतीय दर्षन पर ई–बुक्स :

डिजिटल युग में जहाँ विज्ञान, तकनीक और संचार के नए अवसर खोले है, वहाँ भारतीय दर्शन के मूल्यों, आत्मनिष्ठ चिंतन, नैतिकता, तथा आध्यात्मिकता के सामने कई नई चुनौतियाँ खड़ी कर दी है। भारतीय दर्शन आत्म–अन्वेषण, संयम, सत्य, करूणा और मोक्ष के मार्ग को दर्शाता है, लेकिन डिजिटल सभ्यता मनुष्य को बाहरी आकर्षणों, सूचनाओं, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, और तकनीकी निर्भरता की ओर ले जा रही है।

डिजिटल युग में ई–बुक्स का महत्व बहुत तेजी से बढ़ा है, ये केवल पढ़ने के साधन नही है बल्कि ज्ञान, शिक्षा और शोध की दुनिया में एक बड़ा परिवर्तन लेकर आई है। ई–बुक्स को मोबाइल, लैपटाप, टेबलेट कहीं भी पढ़ा जा सकता है दूरदराज के क्षेत्रों में भी आसानी से अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

3. आयुर्वेदिक और योग एप्स का विकास :

डिजिटल युग में आयुर्वेद और योग एप्स का उपयोग बहुत तेजी से बढ़ा है। लेकिन इसके साथ कई चुनौतियाँ भी सामने आई है। मोबाइल एप्स के कारण आयुर्वेदिक ज्ञान और योग अभ्यास घर–घर पहुँचा। दूरदराज के क्षेत्रों में विशेषज्ञों की कमी को डिजिटल माध्यम से पूरा किया, वीडियो लेक्चर, लाइव योगासन, प्राणायाम प्रशिक्षण, कई एप्स, दोष परीक्षण, जैसी सुविधाएँ देते है। ऑनलाइन वैद्य से परामर्श व्यक्तिगत स्वास्थ्य डेटा पर आधारित सुझाव आसानी से उपलब्ध हो जाते है।

शिक्षा में अनुप्रयोग :

1. तकनीक का सतही उपयोग मोबाइल, इंटरेनट, स्मार्ट क्लास रूम होते हुए भी केवल वीडियो देखना, नोट्स डाउनलोड करना, बच्चे परीक्षा पास करने तक सीखना, सीमित रहना, व्यावहारिक दक्षता का विकास नही हो पाता।

2. डिजिटल कौषल की कमी :

डिजिटल कौशल की कमी बहुत से छात्र–शिक्षक तकनीकी साधनों का इस्तेमाल करना जानते ही नहीं ऑनलाइन शोध करना, डिजिटल टूल का उपयोग, डेटा विश्लेषण, प्रेजेटेंशन कौशल आदि।

3. ऑनलाइन षिक्षा का दुरूपयोग :

ऑनलाइन कक्षाएँ खुली रहती है पर छात्र मनोरंजन में व्यस्त रहते है। बच्चों की सीखने की गुणवत्ता गिरती जा रही है।

4. डिजिटल संसाधनों का असमान उपयोग :

ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को इंटरनेट, लैपटाप या स्मार्टफोन नहीं मिल पाता। तकनीक उपलब्ध न होने से शिक्षा का लाभ नहीं मिल पाता।

भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता :

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता इसलिए और भी बढ़ जाती है क्योंकि यह तकनीक केन्द्रित जीवन को मानव–केन्द्रित, मूल्य–आधारित और संतुलित दिशा प्रदान करती है। आधुनिक समय में जहाँ तनाव, अकेलापन, डिजिटल एडिक्शन, फेक न्यूज और साइबर अपराध जैसी चुनौतियाँ बढ़ रही है, वही भारतीय परंपरा योग, ध्यान, आयुर्वेद, समय–स्वाध्याय, सत्य, सहअस्तित्व

और नैतिक आचरण जैसे समाधान देती है। वेश्विक स्तर पर डिजिटल माध्यमों से वेद, उपनिषद, गीता, आयुर्वेद, खगोल और भारतीय गणित की विद्या अधिक सुलभ हो गई है। इससे यह ज्ञान–विज्ञान, तकनीक और मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में नयी दिशा प्रदान कर रहा है। भारतीय दृष्टि वसुधैव कुटुम्बकम् और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन का संदेश देकर डिजिटल सभ्यता को स्थिर, मानवीय और नैतिक बनाती है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा आज न केवल सांस्कृतिक पहचान का आधार है बल्कि डिजिटल युग की समस्याओं का प्रभावी मार्गदर्शन भी प्रदान करती है।

निष्कर्ष :

डिजिटल युग में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता इसलिए बनी हुई है क्योंकि यह मानव जीवन को संतुलित, नैतिकता, स्वास्थ्य, आध्यात्मिकता और समग्र विकास की दिशा देती है और डिजिटल तकनीकी इसे अधिक सुलभ व्यापक और वैश्विक बना रही है। ऑनलाइन माध्यमों के कारण प्राचीन ग्रंथों, दर्शन, योग आयुर्वेद, साहित्य और वैज्ञानिक ज्ञान का संरक्षण, अध्ययन और प्रसार पहले से अधिक आसान हुआ है। इसलिए कहा जा सकता है कि डिजिटल युग ने भारतीय ज्ञान परंपरा को समाप्त नही किया बल्कि उसे नई ऊर्जा, नया विस्तार और नई पीढ़ी से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है।

- ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, विभिन्न संस्करण, भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल स्त्रोत।
- उपनिषद, (ईश, फढ, केन, मुण्डक) आदि विभिन्न संस्कृत व हिंदी अनुवाद
- व्यास, भगवदगीता प्रसंस्करण
- पाणिनी, अष्टाध्यायी, भारतीय व्याकरण और भाषा ज्ञान का प्रमुख स्त्रोत
- राधाकृष्णन, डॉ. एस. Indian Philosophy, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस
- चट्टोपाध्याय, देवप्रसाद, लोकायत, लोकदर्शन और अन्य रचनाएँ
- अरविंद, श्री The Life Divine, Essays on the Gita
- काणे, पी.वी.